उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय आठ

आधुनिक उपयोग एवं पुराने नियम के युग

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. युगों का विभाजन 1

क. विविधताएँ 2

ख. रूपरेखा 3

ग. निहितार्थ 5

III. युगों का विकास 7

क. पात्र 8

ख. कथानक 9

ग. लेखक 11

1. अतीत के बारे में 11
2. वर्तमान के लिए 12

घ. सम्पर्क 14

1. पृष्टभूमियाँ 14
2. नमूनें 15
3. पूर्वानुमान 17

IV. सारांश 18

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय आठ
आधुनिक उपयोग एवं पुराने नियम के युग

परिचय

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि मसीही विश्वासी जब पुराने नियम को आधुनिक जीवन के ऊपर लागू करने के बारे में सोचते हैं, तो उनमें दो चरम सीमाओं की ओर जाने की प्रवृति होती है? एक चरम सीमा वह है, जिसमें कुछ विश्वासी यह सोचते हैं कि हमें अक्षरश: वैसे ही करने की आवश्यकता है जैसे कि परमेश्वर के लोगों ने पुराने नियम के दिनों में किया। दूसरी चरम सीमा में, कुछ विश्वासी ऐसा सोचते हैं कि हमें सामान्य तौर पर जो कुछ पुराने नियम के दिनों में परमेश्वर ने उसके लोगों को आज्ञा दी थी उसे भूल जाना चाहिए। परन्तु वास्तविकता यह है कि सच्चाई कहीं न कहीं इन दो चरम सीमाओं के बीच स्थित है।

जब बात पुराने नियम को हमारे दिनों में लागू करने की आती है, तो हमें दो बातों को स्मरण रखने की आवश्यकता है: हमें कभी भी अतीत की ओर नहीं जाना चाहिए, परन्तु हमें कभी भी अतीत को भूलना नहीं चाहिए।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* के ऊपर हमारी श्रृंखला का आठवाँ अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "आधुनिक उपयोग एवं पुराने नियम के युग" के नाम से दिया है। इस अध्याय में, हम उन तरीकों की खोज करेंगे जिनमें पुराने नियम के विश्वास ने इतिहास के बड़े विभिन्न कालों या युगों में से होते हुए विकास किया है, और यह विवरण देंगे कि ये विकास कैसे पवित्रशास्त्र के हमारे अपने उपयोग को प्रभावित करते हैं।

हमारे पिछले एक अध्याय में, हमने यह देखा था कि कम से कम तीन तरीकों से पवित्रशास्त्र के मूल श्रोता समकालीन श्रोताओं से भिन्न हैं। मूल श्रोता हमारी अपेक्षा भिन्न ऐतिहासिक युग में रहे हैं। उनकी संस्कृतियाँ हमसे भिन्न थीं। और वे हमारी अपेक्षा भिन्न तरह के लोग थे। यद्यपि ये तीनों भिन्नताएँ असँख्य तरीकों से परस्पर सम्बन्धित हैं, इस अध्याय में हम हमारे ध्यान को पुराने नियम के युगों और कैसे यह आधुनिक उपयोग अर्थात् निहितार्थ को प्रभावित करती हैं, की ओर केन्द्रित करेंगे।

हम आधुनिक उपयोग और पुराने नियम के युगों के मध्य में सम्बन्धों की दो तरीकों से खोज करेंगे। सबसे पहले, हम पुराने नियम के युगों के विभाजन को देखेंगे। और दूसरा, हम युगों के विकास की ओर ध्यान देंगे जो कि इन विभाजनों में प्रस्तुत हैं। आइए सबसे पहले हम पुराने नियम के इतिहास के युगों के विभाजन से आरम्भ करें।

युगों का विभाजन

पुराना नियम सूचना देता है कि बहुत से धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन इतिहास के दौरान हुए हैं। धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन प्रत्येक उस समय प्रकट हुए हैं जब भी परमेश्वर ने उसके लोगों से सम्बन्धित अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के प्रति अपनी अपेक्षाओं में परिवर्तन किया है। और यह परिवर्तन इतने ज्यादा महत्वपूर्ण थे, कि वे युगों के विभाजनों की पहचान के लिए आधार बन गए।

मसीही विश्वासियों ने इन परिवर्तनों को कई तरीकों से वर्णन किया है, परन्तु एक सामान्य और सहायतापूर्ण उदाहरण पुराने नियम के धर्मविज्ञान की तुलना एक प्रगति करते हुए वृक्ष से करता है। एक स्वस्थ्य

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

वृक्ष एक छोटे से बीज से पूर्ण परिपक्वता में आने की ओर विकास करते हुए कई तरह के परिवर्तनों में से हो कर निकलता है। परन्तु संसार के अधिकांश भागों में वृक्षों की वृद्धि वार्षिक मौसम चक्र से जुड़ी हुई है। वृक्ष ठण्डी ऋतुओं में धीमे और ग्रीष्मऋतुओं में तेजी से वृद्धि करने की प्रवृति रखते हैं।

पुराने नियम के धर्मविज्ञान का विकास भी ऋतु अनुसार ही था। कभी कभी यह अपेक्षाकृत थोड़ा परिवर्तित हुआ। परन्तु अन्य समयों पर यह नाटकीय ढँग से परिवर्तित हुआ और परिपक्वता के नए चरणों पर पहुँच गया। परिपक्वता के ये चरण पुराने नियम के युगों के विभाजनों के अनुरूप थे। प्रत्येक युग एक ऐसे समय की अवधि होती है जिसमें पुराने नियम के धर्मविज्ञान को पर्याप्त और लम्बे समय रहने वाले स्थाई परिवर्तन के द्वारा रूपरेखित किया जाता है।

हम पुराने नियम के युगों के विभाजनों पर तीन चरणों में विचार विमर्श करेंगे। सबसे पहले, हम बाइबल में वर्णित इतिहास को उन विभिन्न तरीकों में स्वीकार करेंगे जिसमें विद्वानों ने इसे विभाजित किया है। दूसरा, हम युगों की उस रूपरेखा का वर्णन करेंगे जो कि सहायतार्थ मसीही परम्पराएँ प्रयोग करती आ रही हैं। और तीसरा, हम इस रूपरेखा में वर्णित कुछ निहितार्थों का उल्लेख करेंगे जिनमें पवित्रशास्त्र के आधुनिक उपयोग होता हैं। आइए सबसे पहले हम पुराने नियम के विभाजित इतिहास के विविध तरीकों से आरम्भ करें।

विविधताएँ

हमें इस बात का पता चलने से आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि धर्मशास्त्रियों ने पुराने नियम में वर्णित इतिहास को विभिन्न तरीकों से विभाजित करने के तरीकों को पाया है। क्योंकि एक बात तो यह है कि, समय तेजी से खण्डित अवधि में खत्म नहीं होता है। परिणामस्वरूप, युगों में परिवर्तन सामान्य तौर पर धीमी गति से होता है, जिन विभाजनों को धर्मशास्त्रियों ने रेखांकित किया है उन्हें उन्होंने प्रयोग में होने वाले मापदण्ड के ऊपर आधारित हो कर किया है। इस पर विचार कीजिए, जिस तरह से विज्ञान के क्षेत्र में होता है। पुरातत्वविद् धातु विज्ञान के क्षेत्र में हुए विकास के अनुसार इतिहास को विभाजित करने की प्रवृति रखते हैं। परिणामस्वरूप, वे प्राचीन, मध्यकालीन और उत्तरोत्तर कांस्य युग और प्राचीन, मध्यकालीन और उत्तरोत्तर लौह युग के बारे में बात करते हैं। समाजशास्त्री राजनीतिक घटनाक्रमों के विकास के ऊपर जोर देने की प्रवृति रखते हैं। इसलिए, वे जनजातीय युग, आरम्भिक राष्ट्रीय युग, राजतंत्रीय समयों के बारे में, बन्धुवाई के युग और उत्तरोत्तर-बन्धुवाई के युग के बारे में बात करते हैं।

इसी तरह से, धर्मशास्त्रियों में युगों को चित्रित करने के लिए स्पष्ट तौर पर धर्मवैज्ञानिक मापदण्डों के प्रयोग करने की प्रवृति रहती है। परन्तु फिर भी वे विभाजनों के ऊपर सहमत नहीं होते हैं क्योंकि पुराने नियम का धर्मविज्ञान विभिन्न समयों में विभिन्न तरीकों से विकसित हुआ है। जब एक वृक्ष विकास के विभिन्न चरणों से होता हुआ वृद्धि करता है, तो इसके सभी अंग एक ही समय में या एक ही गति में विकसित नहीं होते। कई बार बीमारियाँ किसी एक शाखा के विकास को वास्तव में रोक देती हैं जबकि दूसरी शाखा का विकास होता रहता है। हो सकता है कि एक वृक्ष के तने की छाल धीमी और अविशिष्ट ढंग से वृद्धि करे, और इसकी छोटी शाखाएँ और पत्तियाँ हो सकता है कि अपेक्षाकृत तेजी से विकास करें। कुछ इसी तरह से, पुराने नियम के धर्मविज्ञान के कुछ अंश धीमी गति से विकसित हुए, जबकि कुछ अन्य अंश थोड़ी तेज गति से और अन्य अत्यन्त तेजी से परिवर्तित हुए। और उनमें से अधिकांश अंशों ने अपने विकास को विभिन्न समयों पर विकसित किया। इस्राएल के विश्वास का प्रत्येक पहलू एक ही समय में एक ही गति से आगे की ओर परिवर्तित हुआ, इस कारण व्याख्याकारों के लिए इसके विभाजनों पर सहमत होना आसान है। परन्तु जैसा दिखाई देता है, धर्मशास्त्रियों ने पुराने नियम के इतिहास को विभिन्न तरीकों से विभाजित किया है।

क्योंकि पवित्रशास्त्र में एक उन्नत होता हुआ प्रकाशन प्राप्त होता है, जो कि हमारे पास समय के बीतने के साथ आया है, इसलिए अक्षरश: जानने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर की इस खुलती हुई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

योजना में कहाँ पर खड़े हुए हैं। धर्मशास्त्री अक्सर परमेश्वर की योजना को विभिन्न युगों और कालों में विभाजित करने की बात करते हैं... हमारे पास नए नियम में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जो यह दिखाते हैं कि कैसे नया नियम पुराने नियम को विभाजित करता है। आप मत्ती की वंशावली के बारे में सोचिए। इसका आरम्भ अब्राहम से होता हुआ दाऊद तक जाता है। इसमें पुराने नियम के इतिहास को अब्राहम से लेकर दाऊद, दाऊद से बन्धुवाई, बन्धुवाई से मसीह की वंशावली में देखा गया है। यह एक तरीका है जिसमें बाइबल पुराने नियम के इतिहास को विभाजित करती हुई, इसके विशेष महत्व को देखती है और तब यह देखती है कि यह कैसे हम तक पहुँचा है। एक अन्य तरीका भी है जो कि नए नियम को भी विभाजित कर देता है। आप पौलुस के बारे में रोमियों 5, और 1 कुरिन्थियो 15 में सोचिए। आप आदम और मसीह के बारे में व्यवस्था से पहले और व्यवस्था के बाद में बोल सकते हैं। इस तरह से, नया नियम ऐसा करने के लिए हमें कई तरह के तरीकों को दिखाता है। बाइबल में परमेश्वर की सम्पूर्ण मंत्रणा के प्रतिबिम्ब में, मैं सोचता हूँ कि, एक सबसे महत्वपूर्ण तरीका जिसमें हम यह कर सकते हैं वह बाइबल की वाचाओं के द्वारा है। यह दिलचस्प है कि जब आप आदम के द्वारा – सृष्टि की वाचा में से होते हुए – नूह की ओर चलते हैं, अब्राहम के द्वारा – अब्राहम की वाचा की ओर, पुराने नियम की वाचा इस्राएल के साथ सम्बद्ध है की ओर – और मूसा, दाऊद की वाचा और तब नई वाचा की अपेक्षा, इस लिए, मैं सोचता हूँ कि यह परमेश्वर-प्रदत्त तरीका है जिसमें छुटकारे का इतिहास वाचाओं में खुलता हुआ चला जाता है जो कि एक से दूसरे की ओर नेतृत्व करती है और अन्ततः यह यीशु मसीह में जाकर समाप्त हो जाती हैं। यह वास्तव में, वास्तव में सोचने के लिए एक सहायतापूर्ण तरीका है जिसके द्वारा हम उत्पत्ति से मसीह की ओर बढ़ते चले जाते हैं, कि कैसे परमेश्वर की सम्पूर्ण मंत्रणा आपस में एक ही ढाँचे में आकर सही आकार में आ जाती हैं। और सचमुच में नए नियम के बहुत सारे तरीके पुराने नियम के इतिहास, छुटकारे के इतिहास के बारे में वाचा के नमूने का अनुसरण करते हुए बोलते हैं।

--डॉ. स्टीफन जे. वेल्लम

अब क्योंकि हमने पुराने नियम के इतिहास के विभिन्न युगों की प्रामाणिकता को स्वीकार कर लिया है, इसलिए आइए एक ऐसी सहायतापूर्ण रूपरेखा की ओर ध्यान दें जिसे बहुत से व्याख्याकारों ने अपनाया है।

रूपरेखा

पुराने नियम के इतिहास का विभाजन करने के लिए सबसे लोकप्रिय तरीकों में से एक प्रत्येक युग को परमेश्वर की एक वाचा के साथ सम्बद्ध कर देने का है। परमेश्वर की वाचा उसके लोगों के साथ सदैव महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक परिवर्तनों को आवश्यक बना देती है, और इसलिए युगों के विभाजनों के लिए सहायतापूर्ण सीमाओं का प्रबन्ध करती है।

बहुत सी मसीही विश्वास की परम्पराएँ पुराने नियम की छह मुख्य दिव्य वाचाओं की पहचान करती हैं: आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद से सम्बद्ध वाचाएँ, और वह नई वाचा जिसे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी किया था कि जो इस्राएलियों की बन्धुवाई में से प्रतिज्ञात् भूमि के अन्त में आएगी।

आदम के सम्बन्ध में, हमें ध्यान देना चाहिए कि उत्पत्ति 1-3 के अभिलेख इब्रानी शब्द *बिरीथ* का प्रयोग नहीं करता है, जिसे हम अक्सर "वाचा" के रूप में अनुवाद करते हैं। परन्तु फिर भी, उत्पत्ति बहुत जोर देती है कि परमेश्वर ने आदम के साथ वाचा बाँधी। मात्र एक उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 6:18 में, परमेश्वर ने कहा कि वह नूह के साथ एक वाचा को "स्थापित" करेगा। "स्थापित" के लिए *कूम* इब्रानी क्रिया शब्द का अनुवाद किया गया है जो कि किसी चीज की पुष्टि करने के लिए प्रयोग होता था जो कि पहले से अस्तित्व में थी, इसकी अपेक्षा कि बिल्कुल

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

नई का आरम्भ किया जाना। इस तरह से, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि उत्पत्ति की पुस्तक परमेश्वर के आदम के साथ रिश्ते को वाचा के रूप में होने को प्रस्तुत करती है। इसके साथ ही, ऐसा भी है कि होशे 6:7 में, भविष्यद्वक्ता परमेश्वर और आदम के मध्य की गई एक वाचा की ओर, या एक ऐसी वाचा के लिए जो कि परमेश्वर और सम्पूर्ण मानव जाति जो कि आदम के द्वारा प्रतिनिधित्व की गई है, में संकेत करता है।

परमेश्वर की नूह के साथ की गई वाचा उत्पत्ति 6:18 में प्रकट की गई है जो कि बाढ़ के आने से पहले है और 9:9-17 में बाढ़ आने के बाद। अब्राहम में परमेश्वर की वाचा का उल्लेख उत्पत्ति 15:18 में किया गया है जो कि अब्राहम के उसकी पत्नी की सेविका हाजिरा के द्वारा एक वारिस को प्राप्त करने से पहले की है और 17:2 में जब उसने हाजिरा से एक उत्तराधिकारी की चाहत की। परमेश्वर की मूसा के अधीन इस्राएल के साथ बाँधी गई वाचा का वर्णन निर्गमन 19-24 में सीनै के पहाड़ की तराई में मिलता है, और यह निकटता के साथ उत्साही लेवी पीनहास के साथ सम्बद्ध है जिसका उल्लेख गिनती 25:13 में मिलता है। परमेश्वर की दाऊद के साथ बाँधी गई वाचा का वर्णन 2 शमूएल 7 में और भजन संहिता 89 और 132 में मिलता है। और अन्त में, हम यिर्मयाह 31:31 में नई वाचा की भविष्यद्वाणी को पाते हैं। इसी वाचा को यशायाह 54:10 और यहेजकेल 34:25 में "शान्ति की वाचा" भी कहा गया है। और लूका 2:20 और इब्रानियों 8:6-12 जैसे प्रसंग हमें आश्वासन देते हैं कि यह वाचा मसीह में आकर पूरी हो गई है।

ये वाचाएँ ऐसे समयों को प्रस्तुत करती हैं जब परमेश्वर इतिहास में बड़े शक्तिशाली रूप से चलित हुआ और ये लम्बे-समय तक स्थाई बने रहने वाले धर्मवैज्ञानिक महत्व को परिचित कराती हैं। आदम का परमेश्वर के साथ वाचा में रिश्ता सृष्टि और परमेश्वर के द्वारा मनुष्य का पाप में गिर जाने के लिए की गई आरम्भिक प्रतिक्रिया में प्रकट हुआ। यह मानव के द्वारा परमेश्वर के प्रति की जाने वाली सेवा की नींव के ऊपर जोर देती है, और वर्णन करती है कि कैसे पाप ने इस सेवा को जटिल बना दिया है। इसमें परमेश्वर की वह प्रतिज्ञा भी निहित है कि मानवता अन्तत: इस सेवा में सफलता को प्राप्त कर लेगी।

नूह के दिनों में, इस संसार के मानव के भीषण पतन ने परमेश्वर को न्याय के रूप में एक बहुत बड़ी बाढ़ को भेजने के लिए मजबूर किया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि, नूह के द्वारा बाँधी गई वाचा में प्रकृति की स्थाई स्थिरता को स्थापित करने के लिए, ताकि पाप से भरे हुए लोगों को उनके पापों से दूर होने और परमेश्वर के प्रति उनकी वास्तविक सेवा करने का अवसर प्रदान करने के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर जोर दिया गया था।

अब्राहम के दिनों में, परमेश्वर ने इस्राएल को उसके लोगों के रूप में चुना जो कि सम्पूर्ण मानव जाति को परमेश्वर की सेवा करने लिए नेतृत्व प्रदान करेंगे। इस तरह से, अब्राहम के साथ बाँधी गई वाचा इस्राएल के चुनाव की ओर उन्मुख थी। वाचा का यह युग इस्राएल का परमेश्वर की प्रतिज्ञा और उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने की आवश्यकता पर जोर देता है।

परमेश्वर ने मूसा के द्वारा एक वाचा को उस समय स्थापित किया जब मूसा ने इस्राएलियों को मिस्र की दासता से छुटकारा दे दिया और उन्हें प्रतिज्ञात् भूमि की ओर ले चलना आरम्भ किया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि, यह वाचा मूसा के द्वारा संहिताबद्ध राष्ट्रीय व्यवस्था की ओर उन्मुख थी, जो कि इस्राएलियों को ऐसा नेतृत्व प्रदान करती है कि वे परमेश्वर के प्रति उनकी सेवा के लिए आगे की ओर बढ़ जाएँ।

दाऊद के दिनों में, परमेश्वर ने इस्राएल के ऊपर दाऊद को एक राजा के रूप में खड़ा किया। दाऊद के साथ उसकी वाचा दाऊद के परिवार को एक स्थायी राजकीय घराने के रूप में स्थापित की गई थी जो कि इस्राएल का साम्राज्यिक विस्तार करने में नेतृत्व प्रदान करेगा। परमेश्वर की सेवा के लिए इस्राएल का विस्तार का यह पहलू अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

अन्त में, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की कि इस्राएल की बन्धुवाई के बाद एक नई वाचा आएगी, जब परमेश्वर पूरे इतिहास को समाप्त करेगा। मसीह परमेश्वर के लोगों को छुटकारा देगा और इस पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परमेश्वर की प्रत्येक वाचा विभिन्न तरीकों से स्थापित की गई जिसमें यह मानव प्राणियों के साथ सम्बन्धित होती है, और प्रत्येक उसके प्रति विश्वासयोग्य लोगों को उसकी सेवा करने के लिए नए सिद्धान्तों का अनुसरण करना प्रदान करती है।

अभी तक युगों के विभाजनों के प्रति हमारे विचार विमर्श में, हमने बाइबल के इतिहास को विभिन्न तरीकों से विभाजित किया गया है, को देखा है, और इन युगों की सहायतापूर्ण रूपरेखा को प्रदान किया है। अब इस समय, हम इस रूपरेखा में उन कुछ निहितार्थों को देखने के लिए तैयार हैं जो कि पवित्रशास्त्र के आधुनिक उपयोग के लिए हैं।

निहितार्थ

पुराने नियम का युगों अर्थात् कालों में विभाजन यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर उसके लोगों को चाहता है कि वे विभिन्न समयों में विभिन्न तरीकों से दिए हुए धर्मवैज्ञानिक विषयों को समझें और उन्हें लागू करें। और जैसा कि पुराने नियम के विश्वासियों को परमेश्वर की सेवा वैसे नहीं करनी थी जैसा कि मानो वे इतिहास के आरम्भिक समयों में रहे थे, नए नियम के विश्वासियों को भी पवित्रशास्त्र को ऐसे अपने जीवन में कभी भी लागू नहीं करना चाहिए कि मानो वे इतिहास के आरम्भिक समयों में रह रहे हैं।

कल्पना करें कि आप एक ऐसे इस्राएली हैं जो कि सुलैमान के द्वारा निर्मित किए हुए यरूशलेम के मन्दिर के ठीक बाद रह रहे हैं। आप जानते हैं कि आप दाऊद की वाचा के युग में रह रहे हैं। आप जानते हैं कि पहले मूसा के युग में, इस्राएली मूसा के मिलाप के तम्बू में बलिदान चढ़ाया करते थे। आप जानते हैं कि आपके अपने युग में, परमेश्वर ने आपको केवल मन्दिर में ही बलिदान चढ़ाने के लिए आदेश दिया है। आपके ऐतिहासिक संदर्भ में, मूसा के मिलाप के तम्बू में बलिदान चढ़ाना परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध होगा। यही बात तब भी सत्य होती यदि आप मूसा की वाचा के अधीन जीवन यापन कर रहे होते और वेदियों का निर्माण करते और विभिन्न स्थानों पर बलिदानों को चढ़ाते, जैसे अब्राहम और अन्य कुलपतियों ने किया। एक बार जब परमेश्वर ने आराधना में बलिदान को नए तरीके से चढ़ाने का आदेश दिया, तो वह उसके लोगों से अपेक्षा करता है कि वे पुराने तरीकों की ओर कभी भी नहीं जाएंगे।

बिल्कुल उसी तरह से, जब हम पुराने नियम की आराधना में बलिदान चढ़ाने के विषय के आधुनिक उपयोग के बारे में सोचते हैं, तो हमें जागरूक रहना चाहिए कि हम नई वाचा के युग में जीवन यापन कर रहे हैं। जैसा कि नया नियम निरन्तर वर्णन करता है कि, मसीह-के-एक-बार के किए हुए, सिद्ध बलिदान ने पहले के सभी तरह के बलिदानों के प्रकारों का स्थान ले लिया है। उसकी क्रूस के ऊपर मृत्यु ने यह परिवर्तित कर दिया है कि कैसे परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को परमेश्वर की आराधना में बलिदान चढ़ाना चाहिए। इसलिए ही नए नियम का इब्रानियों का लेखक बहुत अधिक जोर देकर उन मसीही विश्वासियों की निन्दा करता है जो कि पुराने नियम के बलिदानों की ओर वापस चले जाना चाहते थे। सबसे पहले, वह तर्क देता है कि मसीह ने एक नई वाचा का उदघाटन कर दिया है जिसे यिर्मयाह ने यिर्मयाह 31 में भविष्यद्वाणी किया था। तब वह कहता है कि नई वाचा ने पुराने नियम के बलिदानों की प्रणाली को लुप्त कर दिया है। सुनिए उसने इब्रानियों 8:13 में क्या लिखा है:

> **"नई" वाचा के स्थापन से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराया, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है, उसका मिट जाना अनिवार्य है (इब्रानियों 8:13)।**

यहाँ पर, इब्रानियों का लेखक कहता है कि नई वाचा के आने से पुरानी वाचा के तरीकों को यूनानी शब्द *पालैयो* का उपयोग करते हुए "मिटा" दिए गए हैं जिसे "पुराने कर दिए गए" या "अप्रचलित" के रूप में भी अनुवाद किया जा सकता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब, हमें सावधान रहना चाहिए, क्योंकि बहुत से सही-अर्थ निकालने वाले मसीही विश्वासी इसका यह अर्थ निकाल सकते हैं कि मसीह के अनुयायियों को साधारणतया पुराने नियम को त्याग देना चाहिए और इसकी किसी भी शिक्षा के ऊपर कोई जोर नहीं देना चाहिए। परन्तु सत्य के आगे कोई भी तर्क नहीं चल सकता है। इब्रानियों की पुस्तक स्वयं पुराने नियम को मसीही विश्वासियों के ऊपर लागू करती है। इसका लेखक मसीही विश्वासियों को यह नहीं कह रहा था कि पुराना नियम उनके लिए अप्रासंगिक था। इसकी अपेक्षा, वह यह कह रहा था कि हम एक भिन्न युग में रहते हैं, और यह कि नई वाचा हमसे बलिदान की प्रथा को नई दिशा देने की मांग करती है। हम पुराने तरीकों को अनदेखा नहीं करते हैं, परन्तु हम परमेश्वर की ऐसी सेवा करने की कोशिश नहीं करते हैं कि मानो हम अभी भी पुराने दिनों में रह रहे हों।

एक अन्य असाधारण उदाहरण युद्ध में नेतृत्व प्रदान करने के विषय में है। कल्पना करें कि आप दाऊद के राजवंश की वाचा के समय में जीवन यापन कर रहे हैं। आप जानते हैं कि परमेश्वर ने राजाओं को इस्राएल के ऊपर अभिषिक्त किया है ताकि वह उसके लोगों को बुरे लोगों के विरूद्ध युद्ध में नेतृत्व प्रदान करे। राजा परमेश्वर की ओर से निर्देशन प्राप्त करते थे, और बदले में आपका मार्गदर्शन करते हैं कि आप युद्ध में हिस्सा लें। परन्तु अब कल्पना करें कि आप व्यक्तिगत् तौर पर दाऊदवंशीय राजा को पसन्द नहीं करते हैं, और मूसा की राष्ट्रीय व्यवस्था के युग की वाचा की ओर जाना चाहते हैं। आप हो सकता है कि गिदोन जैसे स्थानीय न्यायी का, या फिर यहोशू जैसे एप्रेमी का, या फिर स्वयं मूसा जैसे लेवी का ही, बिल्कुल वैसे ही जैसे आपके पूर्वजों ने किया, अनुसरण करना चाहेंगे। परन्तु यदि आप इनमें से किसी एक का भी अनुसरण दाऊद के घराने को छोड़कर करते हैं, तो यह पाप होगा। आप परमेश्वर के आदेश को आपके दिए हुए युग में उल्लंघन कर रहे हैं। आप एक वैसी ही गलती कर रहे हैं यदि आप मूसा के दिनों में रहते परन्तु आप एक जनजातीय कुलपति का अनुसरण करते जैसा कि परमेश्वर के लोगों ने अब्राहम की वाचा के युग के समय में किया था। प्रत्येक युग में, हमें उसी सैन्य नेतृत्व का अनुसरण करना है जिसे परमेश्वर ने उस युग के लिए स्थापित किया है।

और इसमें आधुनिक मसीही विश्वासी भी सम्मिलित हैं। नई वाचा के अधीन रहते हुए लोगों के रूप में, हमें यीशु का अनुसरण करना चाहिए, जो कि दाऊद का महान् पुत्र है। वह परमेश्वर-प्रदत्त अभिषिक्त राजा है। और परमेश्वर ने उसे ही उसके लोगों को बुराई की शक्तियों के विरूद्ध युद्ध करने के लिए एकमात्र नेतृत्व करने का अधिकार दिया है। परन्तु हम ऐसा कब करते हैं? युद्ध के लिए हमारी वर्तमान रणनीति क्या है? सुनिए उस तरीके से जिसमें प्रेरित पौलुस इफिसियों 6:12 में वाचा के युद्ध की व्याख्या करता है:

> **क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:12)।**

यह रणनीति पहले के युगों से बहुत अधिक भिन्न है, जब मूसा और दाऊद जैसे अगुवों ने परमेश्वर के लोगों को शारीरिक, माँस और लोहू की लड़ाइयों में नेतृत्व प्रदान किया। वहाँ पर आत्मिक लड़ाइयाँ भी थी, परन्तु इन अगुवों ने परमेश्वर की आत्मिक सेनाओं को कोई नेतृत्व नहीं दिया। इसकी अपेक्षा में, यीशु ने उसकी कलीसिया को शारीरिक लड़ाई में कोई नेतृत्व नहीं दिया। परन्तु वह हमें आत्मिक मल्लयुद्ध में अवश्य ही नेतृत्व देता है, और हम परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करते हैं यदि हम उसके इस रणनीतिक परिवर्तन को अनदेखा करते हैं।

> **नया नियम मुख्य तौर से पुराने नियम की लड़ाइयों और युद्धों को परमेश्वर और शैतान और परमेश्वर के लोगों के मध्य हो रहे बड़े युद्ध और शैतान द्वारा परमेश्वर की योजना को नाश किए जाने की कोशिश के अंश के रूप में देखता है। इसलिए यह आज के मसीही विश्वासियों के ऊपर भी लागू होता है जो कि किसी न किसी रूप में इस तरह की लड़ाई का ही हिस्सा हैं, यदि आप इफिसियों 6 के बारे में सोचें, कि आपका**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मल्लयुद्ध शैतान की बुरी शक्तियों के विरूद्ध है और यह कि मसीही विश्वासियों को परमेश्वर के सारे हथियारों को पहन लेना चाहिए ताकि वे इस युद्ध में दृढ़ता से खड़े होने में सक्षम हो सकें।

-डॉ पी. जे. बायस

नए नियम के लेखक पुराने नियम की आत्मिक और राष्ट्रीय लड़ाइयों के वर्णन को लेते थे और उन्हें निश्चित रूप से उग्र सुधारवादी रूप में बना देते थे और उन्हें बहुत ही भिन्न तरीके से स्वयं के जीवनों में लागू कर ऐसी अपेक्षा करते थे जिसमें लोग उन्हें आज के लोकप्रिय रूप से समझते हैं। सबसे पहले, मसीह आत्मिक लड़ाई को लड़ने के लिए आया। वह अन्धकार पर विजय पाने के लिए आया, यूहन्ना 1 हमें यही कहता है। अन्धकार ने उसे नहीं समझा यह वास्तविक समस्या नहीं थी परन्तु उसके ऊपर विजय पाना समस्या थी, और इसलिए वह अन्धकार के विरूद्ध लड़ाई करता है – हम इसे विशेष रूप से यूहन्ना के सुसमाचार में देखते हैं। और इसलिए, मसीह एक दिव्य योद्धा के रूप में इस संसार के हाकिम के विरूद्ध आता है ,अर्थात् शैतान के विरूद्ध। सच्चाई तो यह है कि, यूहन्ना 12 में, यीशु कहता है कि उसकी महिमा का समय अब आ पहुँचा है, जो कि उसके क्रूसीकरण का समय है, और वह कहता है कि उस समय इस संसार का हाकिम गिरा दिया जाएगा...इसलिए जब पौलुस यह कहता है कि हमारे युद्ध के हथियार परमेश्वर का वचन और प्रार्थना और विश्वास और ऐसी ही बातें हैं, जैसा कि वह इफिसियों 6 में कहता है, तो ऐसा कहने से उसका अर्थ अब भौगौलिक, राष्ट्रीय लड़ाई से नहीं है, जिसके लिए मसीही विश्वासियों को राष्ट्रवादी होना आवश्यक है कि कैसे वे एक युद्ध का अनुभव करें... यहाँ पर तलवार है और यहाँ पर क्रूस है, और हम मानव प्राणियों की यह प्रवृत्ति है कि हम क्रूस को नीचे रख देते हैं और तलवार को उठा लेते हैं। परन्तु यीशु ने कहा कि कोई भी उसका शिष्य तब तक नहीं हो सकता है जब तक कि वह उसके क्रूस को नहीं उठा लेता और उसका अनुसरण नहीं करता है। इसलिए, जिस तरह से हम आत्मिक युद्ध को आज लड़ते हैं वह आत्म-बलिदान करना है, आत्म-त्याग से भरा हुआ प्रेम है जिसे यीशु ने क्रूस के ऊपर से और उसकी सम्पूर्ण प्रार्थिव जीवन और सेवकाई में प्रदर्शित किया।

-रेव्ह. माईक गोल्डो

परमेश्वर ने सदैव यह अपेक्षा की है कि उसके लोग उसकी सेवा इस तरीके से करें कि जो जिस भी युग में रह रहे हैं उस युग की वाचा के प्रति उचित हो। इसलिए, पुराने नियम की यह समझ कि कैसे इतिहास मुख्य वाचाओं के युगों में विभाजित किया गया है पवित्रशास्त्र को हमारे दिनों में लागू करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी अपेक्षा की घड़ी को अतीत की ओर मोड़ दिया जाए, मानो कि परमेश्वर ने इतिहास को आगे की ओर नहीं बढ़ाया है, हमें प्रत्येक उस धर्मवैज्ञानिक विषय का पता लगाना चाहिए जो कि प्रत्येक वाचा के युग में मसीह में नई वाचा के आने तक विकसित हुआ है।

अब क्योंकि हमने आधुनिक और पुराने नियम के युगों के उपयोग को पुराने नियम के युगों के विभाजन के शब्दों में देख लिया है, इसलिए आइये हम उन तरीकों की खोज करें जिसमें युगों के विकास को हमें आधुनिक उपयोग को लागू करने के लिए सूचना देना चाहिए।

युगों का विकास

युगों में घटित हुए घटनाक्रम के विकास की धारणओं को प्रकट करने के लिए, आइए हम एक बार फिर से एक विकास करते हुए वृक्ष के बारे में सोचें। इस समय, कल्पना कीजिए कि आपके पास एक बीज की छायाप्रति है, और छायाप्रति का यह वृक्ष एक बीज से विकसित हुआ है। बीज और वृक्ष इतना ज्यादा भिन्न दिखाई देते हैं कि यह

विश्वास करना अत्यन्त कठिन है कि वे भिन्न समयों पर ऐसे थे। परन्तु वे ऐसे थे। वे विकास की प्रक्रिया में विभिन्न चरणों में एक ही जैविक रूप में थे। उनमें यहाँ तक उनकी आनुवांशिक संरचना वही डी.एन.ए. था जो कि इसे प्रमाणित करता है।

इसी तरह से, आरम्भिक और उत्तरोत्तर पुराने नियम के युगों में असँख्य धर्मवैज्ञानिक भिन्नतायें उनके मध्य में हैं। परन्तु यदि हम उनमें अन्तर्निहित धर्मशास्त्रीय संरचनाओं के बारे में जानें, तो उनके डी.एन.ए. वैसे ही थे, जिन्हें हम पाते हैं कि ये धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन वास्तव में एक वृद्धि करते हुए विश्वास के जैविक विकास का प्रतिबिम्ब है।

हम पुराने नियम के युगों में घटित हुए घटनाक्रमों के विकास की चार भागों में खोज करेंगे। सबसे पहले, हम यह देखेंगे कि इन विकासों के पीछे दो मुख्य पात्र कार्यरत् हैं जो कि निरन्तर बाइबल के पूरे इतिहास में अटलता से बने रहे हैं। दूसरा, हम देखेंगे कि प्रत्येक युग अन्य युग के साथ एक एकीकृत कथानक के साथ जुड़ा हुआ है। तीसरा, हम देखेंगे कि पुराने नियम के लेखक स्वयं अक्सर पहले के युगों को उत्तरोत्तर श्रोताओं के साथ सम्बन्धित करते हैं। और चौथा, हम पुराने नियम के कुछ सम्पर्कों को जो युगों के मध्य में है जिन पर इन उपयोगों को निर्मित करने के लिए पुराने नियम के लेखक निर्भर रहे हैं, को उजागर करेंगे। आइए बाइबल के इतिहास के मुख्य चरित्रों से आरम्भ करें।

पात्र

पवित्रशास्त्र के वर्णित पूरे इतिहास में, एक जैसे पात्र ही अच्छाई की शक्तियों और बुराई की शक्तियों के मध्य बड़े संघर्ष में सम्मिलित रही हैं।

साहित्यिक संदर्भ में, हम कह सकते हैं कि अच्छाई की शक्तियों को कहानी के नायक या मुख्य पात्र ने नेतृत्व प्रदान किया है, अर्थात् स्वयं परमेश्वर ने। और बुराई की शक्तियों को विरोधी या खलनायक ने नेतृत्व प्रदान किया है, जो कि मुख्य तौर से बुरी सृष्टि शैतान है, जो परमेश्वर को उसके लक्ष्य की प्राप्ति को पाने से रोकता है। शैतान बहुत ही ज्यादा शक्तिशाली और चतुर है। परन्तु वह फिर भी एक सृष्टि ही है, और सदैव सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व सम्पन्न नियन्त्रण में है। परन्तु फिर भी, जब दिव्य नाटक का मंचन किया जा रहा है तब परमेश्वर ने शैतान को उसके विरूद्ध खड़े होने की अनुमति दी है।

परमेश्वर सर्वोच्च सृष्टिकर्ता-राजा है जो कि स्वर्गीय सिहांसन से शासन करता और अपने स्वर्गीय महल को उसकी अद्भुत महिमा से भर देता है। स्वर्ग में जो प्राणी उसकी सेवा कर रहे हैं वे पहले से ही उसका सम्मान करते हैं। परन्तु परमेश्वर ने सदैव यह निर्धारित किया है कि वह उसके सम्मान का विस्तार उसकी महिमा को इस पूरी पृथ्वी पर करते हुए इसमें वृद्धि करता रहे। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, परमेश्वर ने उसके राज्य को इस पृथ्वी पर विस्तारित करने की योजना बनाई है, ताकि पृथ्वी स्वर्ग जैसा बन जाए। जब ऐसा घटित होता है, तो ऊपर रहने वाले और इस पृथ्वी के नीचे रहने वाले प्रत्येक प्राणी उसे दी जाने वाली असीमित आराधना और स्तुति को देंगे। परमेश्वर आत्माओं की असंख्य गिनती को उस कार्य को पूरा करने के लिए प्रयोग करता है। परन्तु उसने अपने पार्थिव स्वरूप को, मनुष्य को दिया है, उसे इस पृथ्वी को भरने और इसे अपने अधीन करने का सम्मान दिया है। पूरी बाइबल में, हम परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं, जो कि इस संसार को उसकी अन्तिम महिमा के प्रदर्शन के लिए तैयार कर रहे हैं।

संघर्ष के दूसरी तरफ, शैतान परमेश्वर की महिमा के विस्तार को, मनुष्य को परमेश्वर के लिए इस संसार को भरने और इसे अपने अधीन कर लेने से रोकने के द्वारा से रोकता है। परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर विस्तार किए जाने से रोकने के लिए, शैतान उसकी कई आत्माओं को मानव प्राणियों को परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करने के द्वारा, और परमेश्वर के आत्मिक और मानवीय सेवकों के साथ संघर्ष में नेतृत्व प्रदान करके करता है। वह अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मानवीय सेनाओं को विभिन्न तरीकों से अपनी ओर कर लेता है जिसमें झूठ, धोखा, झूठे धर्म, और पतित मानव पापपूर्ण इच्छाओं का प्रयोग करना सम्मिलित है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

प्रत्येक महान् कहानी में एक नायक होता है, और कोई न कोई ऐसा होता है जो कि उस नायक के विरोध में खड़ा होता है। यहाँ पर एक नायक है, जो कि कहानी का मुख्य पात्र है, और फिर वहाँ पर एक खलनायक है जो कि उस पात्र के विरोध में खड़ा होता है। और बाइबल सब महान् कहानियों में सबसे ज्यादा सर्वश्रेष्ठ कहानी है, और इसलिए यह देखना आश्चर्यजनक नहीं है कि, जब कि आप सम्पूर्ण पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो वहाँ पर एक लड़ाई मिलती है जो कि परमेश्वर और प्रतिज्ञा किए हुए मसीह के साथ और इबलीस के साथ जोड़ी गई है जो ऐसा सब कुछ कर रहा है जिससे कि वह मसीह के आगमन को किसी भी तरह से रोक सके। इसलिए, अदन के बाग में पहले से ही, जब परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी कि एक ऐसा बीज स्त्री से उत्पन्न होगा जो कि इबलीस को कुचल डालेगा, उस समय से लेकर आप देख सकते हैं कि इबलीस परमेश्वर का विरोध हर मोड़ पर कर रहा है। और यह और भी महत्वपूर्ण है कि, वहाँ पर एक बालक है, जिसकी कई बार इबलीस ने जीवन लेने की कोशिश की है, या जब परमेश्वर के लोग सफल हो रहे होते हैं तो वह उन्हें अपनी दासता में लाने की कोशिश करता है और उन्हें कुचल देता है। आप देखते हैं कि कहानी सम्पूर्ण पुराने नियम में बार बार दुहराई गई है।

-डॉ फिलिप्प रेयकेन

पुराने नियम के इतिहास के कथानक में, बिल्कुल आरम्भ से ही, परमेश्वर नायक और शैतान खलनायक रहा है। आप अदन के बाग के आरम्भ से ही इसे देखते हैं क्योंकि यह शैतान है जो कि आदम और हव्वा के पास आता है उसे परीक्षा में डालता है, परन्तु वह उन्हें परमेश्वर के विरूद्ध भी परीक्षा में डालता है...और तब इसमें कोई सन्देह नहीं है कि पतन के बाद, हम इस चलते रहने वाले संघर्ष का उल्लेख पाते हैं जो कि बाकी के पुराने नियम में घटित होने वाला है, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि नए नियम में भी जो कि सर्प के बीज और स्त्री हव्वा के बीज के मध्य में घटित होने वाले हैं। और निश्चित रूप से अन्त में यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है, जो कि मसीह में परिपूर्णता है जो शैतान को शर्मिन्दा कर देता है और उसे एक बार और सदैव के लिए हरा देता है...और मैं सोचता हूँ कि तब आप देखते हैं कि आप इस घटना को सर्प के बीज के रूप में बारी बारी से पुराने नियम में घटित होते हुए देखते हैं, जिसे मैं सोचता हूँ कि सामान्य तौर पर हम परमेश्वर के शत्रु कह सकते हैं, जो कि निरन्तर परमेश्वर का, उसके लोगों का विरोध करते हैं, उसके लोगों के विरोध में युद्ध में जाते हैं, उसके लोगों का उत्पीड़न करते हैं, और आप ऐसा होते हुए निरन्तर देखते हैं। और जैसा कि आप जानते हैं कि, जब इस्राएल आपको यह कहता है कि, उसका उत्पीड़न किया गया है और वह लड़ाई में पलिश्तियों के विरूद्ध में है, तो एक उदाहरण के रूप में, यह इस्राएली बनाम पलिश्तियों की लड़ाई से कहीं ज्यादा है। मैं इसकी पृष्टभूमि में यह देखता हूँ, इसके नीचे यह देखता हूँ कि एक तरह का युद्ध परमेश्वर और शैतान के मध्य में चल रहा है।

-डॉ ब्रायम जे. विकर्स

अब, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि आधुनिक मसीही विश्वासी अक्सर परमेश्वर और शैतान के मध्य चलने वाले इस संघर्ष की महत्वपूर्णता को खो देते हैं। हममें से बहुत से बाइबल के पास बहुत ही थोड़ी जागरूकता के साथ आते हैं कि कैसे अनुभवजन्य संसार परमेश्वर और उन आत्माओं के द्वारा जो उसकी सेवा करती हैं, इसी के साथ शैतान और उसकी आत्माओं से जो उसकी सेवा करती है, से प्रभावित है। परन्तु पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं के साथ यह समस्या नहीं थी। उन्होंने पहले से ही आत्मिक और अनुभवजन्य वास्तविकताओं के मध्य गतिशील परस्पर सम्बन्ध को समझ लिया था। सच्चाई तो यह है कि, यह मान्यता इतनी अधिक प्रचलित थी कि प्राचीन संसार में पवित्रशास्त्र के लेखकों ने कभी भी इनके पूर्ण विवरण देने की आवश्यकता को नहीं समझा। इसलिए, आधुनिक लोगों के रूप में, यदि हम पवित्रशास्त्र के नाटक को इस आत्मिक संघर्ष के शब्दों में देखना आरम्भ करें, तो हमें यह ध्यान देना होगा कि बाइबल के मूल श्रोता पहले से क्या जानते थे: कि इस संघर्ष के अधीन जो कुछ बाइबल कह रही है, उसमें क्या रखा हुआ है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पवित्रशास्त्र के मुख्य पात्रों को अपने ध्यान में रखते हुए, आइए हम पुराने नियम के युग के घटनाक्रम के विकास के दूसरे पहलू की ओर मुड़ें: जो कि बाइबल के कथानक के अधीन आता है।

कथानक

वाचा के युगों के मध्य असंख्य विभिन्नताओं के होने पर भी, परमेश्वर और शैतान के मध्य के संघर्ष के बारे में ये सभी विविधताएँ एक एकीकृत, सभी-को अपने में एकत्र करती हुई कहानी है। सुविधा के लिए, हम पवित्रशास्त्र की वाचा के युगों को बाइबल की कहानी के मुख्य अध्याय के रूप से व्यवहार के रूप में प्रयोग करेंगे, जिसमें परमेश्वर उसकी महिमा का विस्तार अनन्त प्रशंसा को प्राप्त करने के लिए विस्तार कर रहा है।

यह नाटक पहले अध्याय में खुलता है, जो कि आदम का युग है। इस अध्याय के आरम्भ में ही, परमेश्वर प्रथम मानव प्राणी को एक ऐसे स्थान पर रख देता है जहाँ पर उसकी दिखाई देने वाली महिमा आरम्भ में इस पृथ्वी पर प्रकट होती है: जो कि अदन का बाग है, जो उसके लिए पवित्र महल के रूप में कार्य करता है। अपनी सृष्टि के लिए उसके उद्देश्य के अनुसार, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को इस पवित्र बाग की सीमाओं को इसे भरने और पृथ्वी को अपने अधीन कर लेने के द्वारा इसका विस्तार करने के लिए अधिकृत किया। जिसके परिणामस्वरूप उसकी पृथ्वी परमेश्वर के लिए एक ऐसे उपयुक्त स्थान के रूप में परिवर्तित हो जाती जो कि उसकी दृश्य महिमामयी उपस्थिति को प्रकट करती।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, शैतान ने उसकी योजना को पहले मानव प्राणियों को परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के द्वारा नेतृत्व प्रदान करने के द्वारा किया। और इसकी प्रतिक्रिया में, परमेश्वर ने उसकी सृष्टि को श्रापित कर दिया और मानव जाति के कार्य को कठिन बना दिया। उसने साथ ही यह उदघोषणा भी की कि मानवता आगे से प्रतिद्वन्द्वी गुटों में विभाजित होगी: स्त्री का बीज ऐसे लोगों से मिलकर बना होगा जो कि परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करेंगे और सर्प का बीज ऐसे लोगों से मिलकर बना होगा जो कि शैतान के विद्रोह में सम्मिलित होंगे। इसी समय, परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि स्त्री का बीज अन्तत: शैतान और उसके बीज के ऊपर विजय को प्राप्त करेगा।

पुराने नियम के बाकी के वाचा के युग बाइबल की कथा की इस कहानी को निर्मित करते हैं।

दूसरे अध्याय में, नूह की वाचा का युग है, जहाँ परमेश्वर ने शैतान का अनुसरण करते हुए मानवता के द्वारा भीषण हिंसा करने पर इस पृथ्वी को शुद्ध किया था। उसने साथ ही बचे हुए स्त्री के बीज को बचा लिया, अर्थात् नूह और उसके परिवार को, और एक स्थाई संसार को स्थापित किया जिसमें मानव प्राणियों को कहा गया था कि वे जब इस पृथ्वी को भर रहे और इसे अपने अधीन कर रहे हों तो उस समय भ्रष्टता का विरोध करें।

तीसरे अध्याय में, अब्राहम की वाचा का युग है, जिसमें परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार के अंश को स्त्री के बीज में से चुना जो कि मानव को शैतान और उसके अनुयायियों को संघर्ष में नेतृत्व प्रदान करेगा। परमेश्वर ने अब्राहम को उसके वंश को बढ़ाने और उन्हें कनान की भूमि देने की प्रतिज्ञा दी। इस भौगौलिक बिन्दु से आगे, वे अन्त में परमेश्वर और उसकी योजना के विरोध में सभी तरह के विरोध के ऊपर जय को प्राप्त करेंगे। वे पूरी पृथ्वी को अपने अधीन कर लेंगे और परमेश्वर की आशीषों को मानव जाति के प्रत्येक परिवार के ऊपर विस्तारित कर देंगे।

चौथे अध्याय में, मूसा की वाचा का युग है, जिसमें परमेश्वर ने मूसा के द्वार इस्राएलियों को मिस्रियों और उनके शैतानिक देवताओं के ऊपर महान् विजय को दिया। इसी के साथ उसने इस्राएल के राज्य की स्थापना की, जो कि व्यवस्था के अधीन शासित होगा, और उन्हें अधिकृत किया कि वे कनानियों के ऊपर अधिकार कर लें। जब इस्राएली कनान की ओर मुड़े, तो परमेश्वर ने उन्हें कनानियों और उन आत्माओं के ऊपर विजय दी जिनकी वे सेवा करते थे। उसने इस्राएलियों को उस भूमि में स्थापित और खुशहाल किया, और उन्हें उनके अन्तिम लक्ष्य परमेश्वर के राज्य को इस पूरी पृथ्वी के ऊपर विस्तारित करने की ओर प्रेरित किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पाँचवें अध्याय में, जो कि दाऊद की वाचा का युग है, जिसमें दाऊद के परिवार को परमेश्वर के लोगों के ऊपर राज्य करने के लिए और उन्हें उन राष्ट्रों के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए अभिषिक्त किया गया है, जो शैतान की सेवा करते थे। दाऊद का राजवंश कनान में सुरक्षा को लेकर आया और निरन्तर इस्राएल की सीमाओं को परमेश्वर की सेवा करने की योजना के लिए इस संसार में विस्तारित करता गया। दुर्भाग्य से, समय के बीतने के साथ ही इस्राएल के राजा जघन्यता से परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोही हो गए, उस सीमा तक कि परमेश्वर ने उनके साम्राज्य को नाश कर डाला और उन्हें बन्धुवाई में भेज दिया। बन्धुवाई में, उन्होंने विदेशी साम्राज्य और उनके देवताओं के अत्याचार के अधीन दुख उठाया। आखिरकार, परमेश्वर ने बन्धुवाई को समाप्त करने का प्रस्ताव दिया और एक छोटा सा बचा हुआ अल्पसँख्यक समूह प्रतिज्ञा की हुई भूमि में पुन: वापस आया ताकि वे कनान में अपने राज्य को पुन: स्थापित करने की कोशिश कर सकें। परन्तु यहाँ तक कि वे थोड़े से बचे हुए अल्पसँख्यक लोग भी विश्वासयोग्य बने रहने में असफल हो गए, परिणामस्वरूप बन्धुवाई निरन्तर बुराई के अत्याचार के अधीन चलती रही।

पुराने नियम में अन्तिम अध्याय नई वाचा के चरमोत्कर्ष का उल्लेख करता है जिसे परमेश्वर ने कहा है कि वह उस समय स्थापित करेगा जब इस्राएल के बचे हुए कुछ लोग पश्चाताप करेंगे और दाऊद का महान् पुत्र, मसीह या ख्रिष्ट, जब उनके पापों के लिए प्रायश्चित कर लेगा। तब मसीह इस्राएल का नेतृत्व शैतान, बुरी आत्माओं और उन राष्ट्रों के ऊपर जो उनकी सेवा करते हैं, के ऊपर अन्तिम विजय के लिए करेगा। वह शैतान को कुचल डालेगा और उन सबका न्याय करेगा जो उसका अनुसरण करते हैं। अन्त में, मसीह सब बातों को नया कर देगा, परमेश्वर के साथ पृथ्वी को पुन: प्राप्त कर लेगा। परमेश्वर की महिमा से सारी सृष्टि भर जाएगी, और सृष्टि का प्रत्येक प्राणी उसकी प्रशंसा अनन्तकाल के लिए करेगा।

बाइबल की कहानी का यह सार हमें दिखलाता है कि पुराने नियम के युगों की वाचाओं के मध्य में विभिन्नताओं के होने पर भी, ये युग एक दूसरे के ऊपर निर्मित किए हुए हैं जैसे कि एक लम्बी कहानी के अध्याय हों। एक दूसरे के विरोध करने की अपेक्षा, उनको हटाने की अपेक्षा, या यहाँ तक कि एक दूसरे को रोकने की अपेक्षा, इतिहास की ये प्रत्येक अवस्था पवित्रशास्त्र की एकीकृत, विकसित होती हुई चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ने वाली कहानी के लिए संचयी योगदान देती है।

अभी तक, हमने पुराने नियम के युगों के घटनाक्रम के विकास के पीछे मुख्य पात्रों के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है, और देखा है कि कैसे प्रत्येक युग एक दूसरे के साथ एक एकीकृत कथानक के रूप में जुड़ा हुआ है। अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि पुराने नियम के लेखकों ने निरन्तर कैसे आरम्भिक युगों को उत्तरोत्तर श्रोताओं के ऊपर लागू किया है।

लेखक

आपको स्मरण होगा कि इस अध्याय के आरम्भ में, हमने पुराने नियम के उपयोग का सार यह कहते हुए दिया था कि: "हमें कभी भी अतीत की ओर नहीं जाना चाहिए, परन्तु हमें कभी भी अतीत को भूलना नहीं चाहिए।" हम अतीत में जीवन यापन नहीं करते हैं, और इसी कारण से हमें ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए, ऐसा व्यवहार कभी नहीं करना चाहिए कि मानो हम आरम्भिक समयों में जीवन यापन कर रहे हैं। परन्तु हम एक ऐसी कहानी का अंश हैं जो कि अतीत को स्वयं में समाहित करती है। और पुराने नियम के लेखक इसे अच्छी तरह से जानते थे। उन्होंने यह स्वीकार किया कि एक सच्चा ईश्वर है जो कि स्वयं को एक सच्चे धर्म के द्वारा समय के मध्य में प्रकाशित कर रहा है। और इसका अर्थ यह है कि जो बातें परमेश्वर ने कही हैं और जो कुछ उसने अतीत में किया है वह निरन्तर सभी समयों में उसके लोगों का मार्गदर्शन करेगा। इस आलोक में, पुराने नियम के लेखकों ने निरन्तर उन सभी बातों का उल्लेख किया है जिसे उन्होंने अतीत से सीखा था, और उनके दिनों में इसे लागू किया। इसे इस तरह से सोचें: मुख्य रूप से वाचा के छ: युगों का उल्लेख पुराने नियम में किया गया है। परन्तु पहले तीन आरम्भिक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

युगों – अर्थात् आदम, नूह और अब्राहम के बारे में हमारी सूचनायें बाइबल की उन पुस्तकों में से आती हैं जो कि बाद में मूसा, दाऊद और नई वाचा के युगों में लिखी गई पुस्तकें हैं।

हम उन दो सामान्य तत्वों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे जिन्हें पुराने नियम के लेखकों ने उनके लेखों में सम्मिलित किया जो कि युगों के घटनाक्रमों के विकास के प्रति उनकी समझ को प्रकाशित करते हैं। सबसे पहले, हम यह देखेंगे कि पुराने नियम के लेखकों ने अतीत के बारे में क्या लिखा। और दूसरा, हम देखेंगे कि उन्होंने इसे वर्तमान के लिए लिखा। अर्थात्, उन्होंने उन श्रोताओं के लिए लिखा जो कि उनके दिनों में, उनके वर्तमान में रह रहे थे। आइए, सबसे पहले उन तथ्यों की ओर देखें जिन्हें पुराने नियम के लेखकों ने अतीत के बारे में लिखा।

अतीत के बारे में

पुराने नियम की सभी पुस्तकें स्पष्टतया मूल रूप में अतीत के बारे में बात करती हैं। पंचग्रन्थ के ऊपर ध्यान दें – अर्थात् उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण। मूसा ने इन सभी पुस्तकों को वाचा के युग के मध्य में लिखा था। पुरन्तु उत्पत्ति में वह ऐसी घटनाओं का वर्णन देता है जो कि सुदूर अतीत में, आदम, नूह और अब्राहम की वाचा के युग में घटित हुई हैं। निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में, वह उनके पूरे इतिहास में वापस नहीं जाता है। परन्तु फिर भी वह वहाँ पर ऐसी घटनाओं के ऊपर अपने ध्यान को केन्द्रित करता है जो कि उन पुस्तकों के लिखे जाने से पहले घटित हुई थी।

पुराने नियम की बाकी की पुस्तकें दाऊद की वाचा के युग में लिखी गई थी। और वे भी उनके श्रोताओं को अतीत की ओर ले चलती हैं। उदाहरण के लिए, अय्यूब की पुस्तक के लिखे जाने की सबसे ज्यादा संभावना दाऊदवंशीय वाचा के समय राजतंत्र की समयकाल के मध्य लिखे जाने की ज्यादा है। परन्तु इसमें ऐसी घटनाएँ दी गई हैं जो कि अब्राहम के युग में घटित हुई हैं, जो कि राजतंत्र से बहुत पहले का समय है। यहोशू, न्यायियों, और रूत की पुस्तकें दाऊद की वाचा के युग के समय में लिखी गई थीं, परन्तु वे ऐसी घटनाओं का वर्णन करती हैं जो कि मूसा के युग के अन्त में इससे पहले कि दाऊद राजा बनता, घटित हुई थी। शमूएल, राजाओं, इतिहास, एज्रा, नहेमायाह और ऐस्तर मौलिक रूप से उनके श्रोताओं को अतीत में हुए हाल की घटनाओं के बारे में संकेत करती हैं। यह पुराने नियम के भविष्यद्वाणियों की पुस्तकों के साथ भी सत्य हैं, जो कि यशायाह से लेकर मलाकी तक हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने सबसे पहले भविष्यद्वाणियों के द्वारा अपने भाषणों और कार्य के द्वारा लोगों की सेवा की और केवल बाद में ही उन्होंने अपनी सेवकाई के लिए उनके समकालीन श्रोताओं के लिए इनका विस्तार किया। इसलिए इनकी पुस्तकें व्यापक रूप से भविष्यद्वाणियों से भरे हुए कार्यों और भाषणों से भरी हुई हैं जो कि पहले से ही लिखी गई हैं। कुछ इसी तरह से, नीतिवचन और सुलैमान का श्रेष्ठगीत, और सभोपदेशक में भी बीते हुए अतीत के धर्मवैज्ञानिक प्रतिबिम्ब पाए जाते हैं।

अब क्योंकि हम यह समझते हैं कि पुराने नियम के लेखकों ने अतीत के बारे में लिखा, इसलिए आइए अब हम इस सच्चाई की ओर मुड़ें कि उन्होंने वर्तमान के लिए भी लिखा, अर्थात्, उनके समकालीन श्रोताओं के लिए लिखा।

वर्तमान के लिए

जब बाइबल के लेखकों ने पवित्रशास्त्र का लेखन आरम्भ किया...तो उन्होंने पाठकों की, उनके लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लिखा। और वे ऐसे ही नहीं बैठ गए और उन्होंने लिखने के लिए प्रेम होने के कारण ही केवल इन्हें नहीं लिखा। इसकी अपेक्षा, उन्होंने उनके लोगों को सीखने, मार्गदर्शन और उनकी संरचना की आवश्यकता को पूरा करने के लिए लिखा । इसी कारण से, उनमें पहले से प्रत्येक पुस्तक के लिए निहित उद्देश्य था। अन्त:प्रेरणा वह विषय नहीं था कि मात्र "वे बैठ जाएं और लिखें।" नहीं ऐसा नहीं था, परन्तु विषय यह था कि वहाँ पर एक आवश्यकता को पूरा किया जाना था इसलिए – "उन्हें उठना था और लिखना था।" इसीलिए प्रत्येक लेखक ने उसके लोगों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ऐसी सूचनाओं को इस तरीके से प्रदान किया जिसे उनके लोग समझ सकें।

-डॉ घेशान खालेफ, अनुवादित किया हुआ

पवित्रशास्त्र के लेखकों ने जिन श्रोताओं के लिए वे लिख रहे थे उनकी परिस्थितियों के लिए बड़ी निकटता से अपने ध्यान को दिया। हमें यहाँ पर और अधिक गहराई में नहीं जाना चाहिए। हम यह नहीं कहना चाहते हैं कि वे मूल श्रोताओं की परिस्थितियों को इतना ज्यादा जानते थे कि वे उत्तरोत्तर पाठकों के लिए इसका कुछ भी अर्थ दे नहीं सकते थे। हम रोमियों 15:4 को और अन्य स्थानों से जानते हैं जहाँ पर पौलुस यह कहता है कि जो कुछ लिखा गया है वह हमारे उत्साह के लिए लिखा गया है। और फिर भी, पवित्रशास्त्र के लेखकों ने सावधानी से ध्यान दिया कि जिन लोगों के लिए वे लिख रहे थे उनके जीवनों में क्या कुछ चल रहा था...उदाहरण के लिए, उत्पत्ति, ऐसे समूह के लोगों के लिए लिखा गया है जिन्होंने मिस्र को छोड़ दिया था। उन्होंने इस पृथ्वी को सबसे शक्तिशाली साम्राज्य को अभी अभी क्रोधित किया था। वे ऐसी भूमि पर जाने के लिए तैयार थे जहाँ पर उनकी लड़ाई उनके शत्रुओं के साथ होने वाली थी। उन्हें यह जानने की आवश्यकता थी कि उन्हें किसी से भी डरने की आवश्यकता नहीं थी और इसलिए उत्पत्ति की पुस्तक परमेश्वर के इस चित्र के साथ आरम्भ होती है जिसने सब कुछ की सृष्टि की थी, जो कि सभी राष्ट्रों को अपने नियन्त्रण में लिए हुए था, जिसने कुलपतियों के साथ प्रतिज्ञायें की थी और वह इन प्रतिज्ञाओं के ऊपर टिका हुआ था। इस्राएल को किसी से भी डरने की आवश्यकता नहीं थी...इसलिए, एक बार जब हम मूल श्रोताओं की परिस्थितियों को जान जाते हैं तो यह वास्तव में हमें न केवल यह देखने में सहायता करती है कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है अपितु यह कि यह क्यों ऐसा कहता है। और तब हम इस तरह के प्रश्नों को पूछना आरम्भ करते हैं कि, क्या हम ऐसे ही समान परिस्थितियों का सामना तो नहीं कर रहे हैं जैसा कि इस्राएली मिस्र को छोड़ने के बाद जंगल में कर रहे थे। और हम यह देखना आरम्भ करते हैं कि कैसे परमेश्वर उसके लोगों की देखभाल एक चरवाहे के रूप में करता है और कैसे वह हमारी आवश्यकताओं के लिए तरस प्रकट करता है

-डॉ जिम्मी एगन्

पवित्रशास्त्र के लेखकों ने यह समझ लिया था कि अतीत बाइबल के विश्वास के जैविक विकास की आरम्भिक अवस्था को प्रस्तुत करता है। परन्तु उन्हें सबसे पहले उन श्रोताओं की सेवा करने की बुलाहट प्राप्त हुई जो कि उनके समय में रहते थे। इसलिए, उन्होंने अतीत को इस तरह से लिखा जिसने उनके मूल श्रोताओं के जीवनों के लिए सम्पर्कों का निर्माण किया। उन्होंने ऐतिहासिक लोगों, कार्यों, शब्दों, संस्थानों और ऐसे तरीकों के ऊपर प्रकाश डाला जो उनके मूल श्रोताओं के जीवनों के इन ऐतिहासिक विषयों के साथ सम्बन्धित हो जाए। अधिकांश हिस्सों में, पुराने नियम की पुस्तकों के मूल श्रोता बाइबल के लेखकों के उन साहित्यिक सम्पर्कों को पहचानते थे, जिनके लिए उन्होंने इन सम्पर्कों को निर्मित किया था। इसलिए, लेखकों ने सामान्य तौर पर इन सम्पर्कों की व्याख्या करने की कोई चिन्ता नहीं की। अन्य समयों पर, लेखकों ने छोटे छोटे सुरागों को दिया है जो कि अतीत और वर्तमान के मध्य के सम्पर्कों की ओर संकेत प्रदान करते हैं। और फिर भी अन्य संदर्भों में, बाइबल के लेखकों ने परोक्ष में ही ऐसा स्पष्टीकरण देने का प्रस्ताव दिया है जो कि उनके श्रोताओं को यह देखने में सहायता करता है कि वे कैसे अतीत को उनके ऊपर लागू कर सकते हैं।

बिल्कुल वैसे ही जैसे पुराने नियम के लेखकों ने अतीत को उनके वर्तमान के श्रोताओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने के लिए तरीकों को खोज निकाला है, आधुनिक विश्वासियों को भी उन अतीत के बारे में लिखे गए लेखों में से स्वयं को सम्बन्धित करना चाहिए। हाँ, आधुनिक उपयोग इससे सम्बन्धित हैं कि हमारे दिनों में हमारे साथ क्या कुछ घटित हो रहा है। परन्तु यह सदैव अतीत के तरीकों के ऊपर आधारित होता है।

आधुनिक संसार में परमेश्वर के लोगों की तरह रहते हुए, हमारा विश्वास बड़ी गहनता से उससे सम्बन्धित है कि कैसे परमेश्वर ने बहुत पहले स्वयं को प्रकाशित किया। हम पुराने नियम की पुस्तकों के आधुनिक उपयोग के लिए समर्पित हैं जो कि अतीत से सम्बन्धित हैं। और यहाँ तक कि जब हम नए नियम की पुस्तकों को स्वयं के ऊपर लागू कर रहे हैं, हम अभी भी अतीत की ओर देख रहे हैं। अब, प्रकाशितवाक्य की तरह की कुछ पुस्तकें बहुत ज्यादा

भविष्य के ऊपर स्वयं के ध्यान को केन्द्रित करती हैं। परन्तु यहाँ तक कि प्रकाशितवाक्य दर्शनों का अभिलेख है जिसे इसके लेखक यूहन्ना ने अतीत में इसके मूल श्रोताओं के ऊपर लागू कर दिया है। इस तरीके या किसी अन्य तरीके से, पवित्रशास्त्र की प्रत्येक पुस्तक जो कुछ परमेश्वर ने अतीत में किया है, उसके ऊपर स्वयं के ध्यान को केन्द्रित करती है। इसलिए, इन पुस्तकों को आधुनिक संसार में लागू करने के लिए, हमें अतीत के ऊपर भी ध्यान देना होगा।

अभी तक, हमने युगों के घटनाक्रमों के विकास के ऊपर हमारे विचार विमर्श में पुराने नियम के युगों के विकास के पीछे कार्यरत मुख्य पात्रों, पवित्रशास्त्र का एकीकृत कथानक, और इस सच्चाई को कि पुराने नियम के लेखकों ने आरम्भिक युगों को उनके समकालीन श्रोताओं के ऊपर लागू किया, को पूरा कर लिया है। इसलिए, अब हम अपने ध्यान को उन सम्पर्कों के प्रकारों के ऊपर केन्द्रित करने के लिए तैयार हैं जिन्हें बाइबल के लेखकों ने अतीत और वर्तमान के मध्य में रेखांकित किया है।

सम्पर्क

हम अतीत और वर्तमान के मध्य पुराने नियम के लेखकों के द्वारा रेखांकित किए गए तीन तरह के सम्पर्कों के बारे में बात करेंगे। सबसे पहले, उन्होंने उनके श्रोताओं की पृष्टभूमियों को उनके विश्वास के विभिन्न पहलूओं से प्रदान किया। दूसरा, उन्होंने ऐसे आदर्शों को उनके श्रोताओं के लिए प्रस्तुत किया जिनकी या तो वे नकल कर सकते थे और या फिर जिन्हें वे इन्कार कर सकते थे। और तीसरा, उन्होंने अपने श्रोताओं के अनुभवों के लिए पूर्वानुमानों को प्रदान किया। आइये सबसे पहले हम यह देखें कि बाइबल के लेखकों ने कैसे उनके श्रोताओं को ऐतिहासिक पृष्टभूमियाँ प्रदान की।

पृष्टभूमियाँ

पुराने नियम के लेखकों ने ज्यादात्तर अतीत को प्रासंगिक उनके श्रोताओं के वर्तमान के अनुभवों के उद्भव या पृष्टभूमियों का स्पष्टीकरण देते हुए प्रदर्शित किया। उदाहरण के लिए, मूसा ने आदम और हव्वा के विवाह के बारे में विवरण दिया है, उसने अपनी इस कहानी को उसके श्रोताओं के साथ परोक्ष में सम्पर्क स्थापित करने के लिए यहीं पर विराम लगा दिया। सुनिए उत्पत्ति 2:14 में मूसा के शब्दों को:

> **इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे (उत्पत्ति 2:14)।**

इस आयत में, मूसा ने यह व्याख्या की है कि कैसे आदम की वाचा के युग में एक गुण मूसा के युग के श्रोताओं के लिए प्रासंगिक था। विशेषकर, आदम और हव्वा के विवाह को विवाह के लिए स्थाई रूप से स्थापित विधान के रूप में, जिसे मूसा के दिनों में भी विस्तारित कर दिया गया था।

एक बार जब हम यह देखते हैं कि मूसा ने इस घटना को उसके मूल श्रोताओं के लिए पृष्टभूमि के रूप में उपयोग किया, तो हम उसी तरीके से इसके साथ स्वयं को सम्बन्धित कर सकते हैं। आदम और हव्वा का विवाह प्राचीन इस्राएल में विवाह के लिए पृष्टभूमि था, और यह आज के हमारे दिनों के लिए भी विवाह के लिए पृष्टभूमि है।

अन्य समयों पर, बाइबल के लेखकों ने पृष्टभूमियों को इस तरीके से उपयोग किया है जो कि परमेश्वर के द्वारा ऐतिहासिक पात्र को स्वीकार किया जाना या अस्वीकार किए जाने को प्रकाशित करता है। उदाहरण के लिए, रूत की पुस्तक में हम रूत, बोअज या नाओमी के विषय में किसी भी तरह की कोई गलती को नहीं पाते हैं, और यह प्रगट करता है कि उन्हें परमेश्वर का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त था। हमें इसका कारण पुस्तक के अन्त में पाते हैं। सुनिए उस वंशावली को जिससे रूत 4:21-22 में यह पुस्तक अन्त होती है:

सल्मोन से बोअज, और बोअज से ओबेद और ओबेद से यिशै, और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ (रूत 4:21-22)।

यह वंशावली यह प्रगट करती है कि बोअज प्रत्यक्ष में राजा दाऊद का पूर्वज है। यह अन्त मूसा के युग की घटनाओं को मूल श्रोताओं के साथ सम्बन्धित करता है, जो कि दाऊद की वाचा के समय में रह रहे थे।

सभी संभावनाओं में, यही प्रश्न उठाया गया है कि दाऊद का शासन वैध था या नहीं क्योंकि वह मोआबी रूत के वंश से आया था। परन्तु रूत की कहानी यह प्रदर्शित करती है कि उसका इस्राएल में सम्मिलित किया जाना प्रत्येक पक्ष से आदर्श से भरा हुआ था, और यह कि परमेश्वर ने उसे पूर्ण रूप से अनुमोदित किया। इस तरह से, रूत की पुस्तक उस पृष्टभूमि को प्रदान करती है जो दाऊद को इस्राएल के राजा के रूप में चुने जाने पर प्रबलता से जोर देती है।

और एक बार फिर से, आधुनिक उपयोग के लिए हमारे पास ऐसा अवसर है कि हम इस सम्पर्क को विस्तारित कर सकते हैं जिसे रूत के लेखक ने उसके मूल श्रोताओं के ऊपर निर्मित किया है। बिल्कुल वैसे ही जैसे परमेश्वर ने रूत को अनुमोदित किया दाऊद के राजवंश की वैधता को दाऊद के समय में प्रदर्शित करता है, यह साथ ही दाऊद के महान् उत्तराधिकारी, यीशु, की शासन की वैधता की पृष्टभूमि को हमारे दिनों में भी प्रदान करता है।

पृष्टभूमियों को प्रदान करने के साथ ही ये सम्पर्क जिनको लेखकों ने अतीत और वर्तमान के मध्य में रेखांकित किया है ऐसे नमूनों को प्रस्तुत करते हैं जिनको उनके मूल दर्शक या तो नकल कर सकते हैं या फिर अस्वीकार कर सकते हैं।

नमूने

कई बार जब हम बाइबल की कहानी को पढ़ रहे होते हैं तो हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि, "अब, क्या यह एक अच्छा उदाहरण है, या एक बुरा उदाहरण है? क्या मुझे ऐसा ही कार्य करना चाहिए जैसा इस व्यक्ति ने बाइबल में किया है, या क्या मैं इससे कुछ भिन्न करूँ?" और इस प्रश्न का उत्तर हो सकता है कि विभिन्न प्रसंगों में से भिन्न हो सकता है, परन्तु यहाँ पर एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है जो कि बाइबल की अधिकांश कहानियों के ऊपर लागू हो सकता है और वह यह है जिसे मैं परिणामों का कानून कह कर पुकारता हूँ, और वह यह है कि कहानी के अन्त में देखा जाए और यह देखा जाए कि उस व्यक्ति के साथ क्या हुआ। क्या उन्होंने परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त किया या परमेश्वर के न्याय को प्राप्त किया? और अक्सर यहीं पर वह सुराग है जिसके बारे में हमें पता लगाना है यदि कोई हमारे लिए एक अच्छा आदर्श या एक बुरा आदर्श प्रस्तुत करता है।

-डॉ फिलिप्प रेयकेन

आइए नमूनों अर्थात् आदर्शों के दो उदाहरणों को यहोशू की पुस्तक में से देखें, जो कि मूसा के युग की घटनाओं में दाऊद के युग में रहने वाले मूल श्रोताओं के लिए वर्णित किए गए हैं। यहोशू के लेखक ने यहोशू 2-6 में इस्राएल की यरीहो में की गई सफल लड़ाई का एक सकारात्मक नमूने को प्रस्तुत किया है और यहोशू 7 में ऐ नामक स्थान में हुई लड़ाई का नकारात्मक नमूने को प्रस्तुत किया है।

यरीहो की लड़ाई के लम्बे विवरण में, ऐसा कोई भी संकेत नहीं मिलता है कि यहोशू, उसके जासूसों ने या इस्राएल की सेना ने ऐसा कुछ किया हो जो कि परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध था। उन्होंने अपनी पूर्ण भक्ति को यरीहो से कुछ दूरी पर गिलगाल में खतना करके स्वयं को परमेश्वर के अधीन करने के द्वारा दिखाया है, और उन्होंने लेवियों और याजकों का अनुसरण किया जब वे शहर के चारो ओर गाते हुए, चिल्लाते हुए और नरसिंगे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

को फूँकते हुए चक्कर काटने लगे, बिल्कुल वैसे ही जैसे परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया था। इस तरह से, यहोशू के लेखक ने यरीहो की कहानी को यहोशू 6:27 में इन सकारात्मक शब्दों के साथ अन्त किया है:

और यहोवा यहोशू के संग रहा; और यहोशू की कीर्ति उस सारे देश में फैल गई (यहोशू 6:27)।

परन्तु उस विवरण के आरम्भ के बारे में सुनिए जो कि यहोशू 7:1 में ऐ नामक स्थान की लड़ाई में घटित हुआ:

परन्तु इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय में विश्वासघात किया (यहोशू 7:1)।

यह आयत यरीहो में इस्राएल की लड़ाई के सकारात्मक नमूने की अपेक्षा ऐ नामक स्थान में हुई लड़ाई के नकारात्मक नमूने के विपरीत है।

जब इस्राएल ने छोटे से शहर ऐ के ऊपर आक्रमण किया, तो इस्राएल की बड़ी सेना इसलिए हार गई क्योंकि आकान ने यरीहो में परमेश्वर के आदेश के विरूद्ध विद्रोह करके कुछ चीजों को चुरा लिया था जो कि युद्ध से प्राप्त की गई थी जो उसके लिए पवित्र थी। यहोशू और इस्राएल ऐ नामक स्थान की लड़ाई में उस समय तक विजय को प्राप्त नहीं कर सके जब तक उनका सामना परमेश्वर के साथ नहीं हो गया, उन्होंने अपने पापों से पश्चाताप नहीं कर लिया, और आकान और उसके परिवार के ऊपर भंयकर न्याय को नहीं ले आए।

यरीहो और ऐ नामक स्थानों के मध्य में हुई लड़ाइयों की तुलना को यहोशू ने उसके पाठकों को दोनों नमूनों अर्थात् सकारात्मक के पीछे चलने के लिए इसका अनुसरण करना और नकारात्मक को अस्वीकार करने के लिए प्रदान किए, जिसे दाऊद के युग के मूल पाठकों को वास्तव में सीखना था कि वे कैसे अपने राजाओं का अनुसरण लड़ाइयों में करें।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम यहोशू के जैसे शारीरिक युद्ध को नहीं करते हैं, क्योंकि नया नियम केवल हमें आत्मिक लड़ाई लड़ने के लिए बुलाहट देता है। परन्तु फिर भी, आधुनिक उपयोग में हम इन सम्पर्कों को विस्तारित करते हुए इन सकारात्मक और नकारात्मक नमूनों का प्रयोग करते हैं, ताकि हम आत्मिक लड़ाई को उचित तरीकों से करना सीख सकें। सामान्यतया हमें यह कहना चाहिए, कि जैसे यहोशू यरीहो में परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से समर्पित था वैसे ही हमें भी समर्पित होना चाहिए, और हमें उन आदेशों को अनदेखा करने से बचना चाहिए जैसे आकान ने ऐ नामक स्थान में किया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, यहाँ पर ऐसे असंख्य विवरण हैं जो कि इन विस्तृत आधुनिक उपयोगों से सम्बद्ध हैं। परन्तु वे सम्पर्क जिन्हें यहोशू का लेखक उसके मूल श्रोताओं के लिए रेखांकित करता है उस इस तरीकों मे विस्तारित किया जा सकता है जो हमें हमारी परिस्थितियों में उन विवरणों को निर्धारित करने में सहायता कर सके।

बाइबल हमें कई तरीकों से शिक्षा देती है कि एक ईश्वरीय जीवन कैसा होता है, पाप क्या है, आदि., कई बार केवल यह कहने के द्वारा कि – तू कर, या तू ऐसा न कर या तू ऐसा करना या तू ऐसा ना करना – के द्वारा, परन्तु साथ में वह हमें वास्तविक लोगों का इतिहास देती है जिन्होंने उस समय, प्रतिदिन के जीवन को यापन किया। और जैसा कि हम उनके बारे में पढ़ते हैं, हम जानते हैं कि हमें उनके नमूनों से सकारात्मक या नकारात्मक को सीखना चाहिए। रोमियों की पुस्तक में ऐसा कहा गया है कि, "जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।" इस तरह से हमारे पास सकारात्मक उदाहरण हैं जिनके पीछे चलने की हमें चेष्टा करनी चाहिए, और हमारे पास नकारात्मक उदाहरण हैं जिनसे हमें दूर होना

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

चाहिए...बिल्कुल वैसे ही जैसे दाऊद ने बेतशेबा के साथ व्यभिचार किया था, हम दस आज्ञाओं में से जानते हैं कि यह गलत था; हम उस वर्णन से जानते हैं कि नातान ने उस पर उसके पाप के लिए दोष लगाया। और हमारे पास अन्य संकेत भी हैं। इस तरह से हम एक ऐसे व्यक्ति का गलत उदाहरण जानते हैं जो कि सामान्य तौर पर अच्छा था, परमेश्वर के मन के अनुसार था...परिणामस्वरूप भिन्नता जानने के लिए हमें क्या सक्षम करता है? परमेश्वर की व्यवस्था, स्पष्ट शिक्षा, धारणाएँ और इसे कार्य में लाई जाती हैं, और इस तरह से हम दोनों को इकट्ठा कर सकते हैं।

-डॉ ऐन्ड्रयु डेविस

आप जानते हैं, कई बार जब आप पवित्रशास्त्र को देख रहे होते हैं तो एक व्यक्तिगत् चरित्र या उसका जीवन जिसकी आप नकल करना चाहते हैं, का पता लगाना अत्यन्त कठिन होता है। और हमें उसे स्मरण रखना चाहिए जिसको हम जानते हैं कि हम इसकी नकल कर सकते हैं जो कि स्वयं यीशु है। केवल वही एक है जो कि हमारी सभी आलोचनाओं में सफल ठहरता है। बाकी के प्रत्येक व्यक्ति की सावधानी से जाँच की जानी चाहए। जिस कारण से वे बाइबल में हैं वे सामान्यत: हमारे लिए नकल किए जाने के लिए मौलिक रूप से न हों...परन्तु जब हम उनके बारे में पता लगा रहे होते हैं तब हम उनके जीवनों से ऐसे पाठों को प्राप्त कर सकते हैं कि कब उनकी नकल की जानी चाहिए और कब नहीं...आपको संदर्भ के ऊपर देखना चाहिए, उनके कार्यों के लिए क्या कहा गया है, उनके कार्यों से क्या परिणाम निकले, क्या वे राज्य के विस्तार के लिए अपना योगदान देते हैं या नहीं, परन्तु उन मूल नैतिक धारणाओं की ओर देखें जो कि पवित्रशास्त्र में दी गई हैं और फिर अपना निर्णय लें, और यीशु को छोड़कर प्रत्येक के लिए ऐसा करना एक सही कार्य है। क्योंकि हम जानते हैं उसने क्या कहा और जो कुछ किया अच्छा, सत्य और सुन्दर किया। बाकी का हर कोई बाइबल की नैतिकता के सूक्ष्मदर्शी के अन्तर्गत आ जाता है।

-डॉ सेन्डर्स ऐल. विल्सन

अन्त में, पृष्टभूमि और नमूनों को प्रदान करने के साथ ही, पुराने नियम के लेखकों ने अतीत और वर्तमान के मध्य सम्पर्कों को रेखांकित उनके मूल श्रोताओं के अपने अनुभवों के पूर्वानुमानों को समाविष्ट करते हुए किया।

पूर्वानुमान

बाइबल के लेखकों ने निरन्तर अतीत के बारे में इस तरीके से लिखा जिसमें उन्होंने यह संकेत दिया कि कैसे अतीत की घटनाएँ उनके श्रोताओं की परिस्थितियों के सदृश थीं जिनका वे सामना कर रहे थे। इस तरह के सम्पर्क एक साहित्यिक योजना जिसे "पूर्वाभास करना" के रूप में पुकारा जाता है, के सदृश है। प्रतिछाया में, एक लेखक कहानी के आरम्भिक विवरणों को इस तरीके से प्रस्तुत करता है जो कि उत्तरोत्तर विवरणों को पूर्वाभासित करते हैं। और बाइबल के लेखक कई बार अतीत को इस जैसी ही प्रत्याशा के साथ लिखते हैं। वे अतीत की घटनाओं के बारे में इस तरीके से लिखते हैं जो कि उनके पाठकों के अनुभवों में पूर्वानुमानित होती हैं।

एक जाना-पहचाना पूर्वानुमान मूसा की कहानी में अब्राहम की मिस्र की ओर की जाने वाली यात्रा के समय में प्रकट होता है, जिसका विवरण उत्पत्ति 12:10-20 में किया गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मूसा ने उस सच्चाई को बतलाया है जो कि अब्राहम के युग में घटित हुई थी, परन्तु उसने कहानी को इस तरह से वर्णित किया है कि उसके मूल श्रोताओं को इस तरह से सहायता मिली की उन्होंने अब्राहम और स्वयं में कई तरह की समानताओं को पहचान लिया। उदाहरण के लिए, अब्राहम मिस्र में गया क्योंकि वहाँ पर अकाल पड़ा हुआ था, बिल्कुल वैसे ही जैसे मूसा के मूल पाठक मिस्र में थे क्योंकि वहाँ अकाल पड़ गया था। फिरौन के अन्यायपूर्ण व्यवहार

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ने अब्राहम को मिस्र में रोक दिया क्योंकि उसने सारा को अपने जनानखाने के लिए ले लिया था, बिल्कुल उसी तरीके से मिस्रियों ने अन्यायपूर्ण तरीके से इस्राएलियों को मूसा के दिनों में गुलामों की तरह रख लिया था। परमेश्वर ने अब्राहम को फिरौन के घराने के ऊपर विपत्ति भेजने के द्वारा छुटकारा दिया और उसने मूसा के दिनों में मिस्रियों और फिरौन के घराने के ऊपर विपत्ति भेज कर इस्राएलियों को छुटकारा किया। फिरौन ने अब्राहम को अपनी धन सम्पत्ति के साथ विदा किया, और मूसा के दिनों में निर्गमन में भी, फिरौन और मिस्रियों ने इस्राएलियों को मिस्र की धन सम्पत्ति के साथ विदा किया।

मूसा ने इन समानताओं को इस लिए रेखांकित किया क्योंकि वह अब्राहम के अनुभवों को उनके स्वयं में पूर्वानुमित प्रकट करता है। मूसा चाहता था कि उसके मूल पाठक मिस्र के उनके समय को आदर्श मानने से मुड़ जाने के लिए उत्साहित हों, और अपने छुटकारे को स्वयं के लिए परमेश्वर के महान् सामर्थ्य से भरे हुए कार्य के रूप में देखें।

एक बार फिर से, आधुनिक उपयोग में हमारा कार्य इस सम्पर्क को देखना है जिसे मूसा ने अब्राहम के जीवन के ऊपर उसके मूल श्रोताओं के लिए निर्मित किया, और उस सम्पर्क को हमारे आधुनिक जीवनों के लिए विस्तारित करना है। उदाहरण के लिए, नया नियम यह शिक्षा देता है कि मसीह ने हमें बुराई के अत्याचार से छुटकारा दिया है, बिल्कुल वैसे ही जैसे उसने पहले अब्राहम और बाद में इस्राएल का छुटकारा किया था। इस तरह की समानताओं के द्वारा, अब्राहम की मिस्र में की गई यात्रा उन तरीकों का पूर्वानुमान हैं जिसमें आधुनिक मसीही विश्वासियों को चाहिए कि वे स्वयं के विश्वास को समझें और परमेश्वर की सेवा करें।

जब कभी हम पवित्रशास्त्र को लागू करते हैं, तो हमें युगों में हुए घटनाक्रमों के विकास को ध्यान देने की आवश्यकता है जो कि बाइबल के और हमारे समय के मध्य में घटित हुई हैं। और पुराने नियम के लेखकों के द्वारा पृष्टभूमि, नमूनों और पुर्वानुमानों के द्वारा रेखांकित किए हुए सम्पर्क हमें उस आदर्शों को प्रदान करते हैं जो कि हमारी सहायता उस खाई को पाटने में करती है जो कि इन ऐतिहासिक युगों के मध्य में है।

सारांश

आधुनिक उपयोग और पुराने नियम के युगों के ऊपर इस अध्याय में, हमने पुराने नियम के इतिहास के युगों के विभाजनों के ऊपर ध्यान उनकी विभिन्न तरह की विविधताओं, युगों की एक सामान्य रूपरेखा, और इन विभाजनों के निहितार्थों के शब्दों में दिया। और इन विभाजनों के मध्य हमने युगों के विकास को उनके स्थाई पात्रों, एकीकृत कथानक, बाइबल के लेखकों के द्वारा आरम्भिक युगों के उपयोग को किया जाना, और युगों के मध्य उन सम्पर्कों को जो हमारे उपयोग के लिए सहायता करते हैं, के रूप में ध्यान दिया।

जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर की वाचा बाइबल के इतिहास को मुख्य युगों में विभाजित करती है जिसके भिन्न धर्मवैज्ञानिक उन्मुखीकरण हैं। इस लिए, हमें कभी भी हमारे दिनों में परमेश्वर की सेवा अतीत के दिनों में वापस जाते हुए नहीं करनी चाहिए। परन्तु हमें कभी भी यह नही भूलना चाहिए कि परमेश्वर ने अतीत में क्या प्रकाशित किया है। जब हम उन तथ्यों के ऊपर ध्यान देते हैं जिनमें धर्मवैज्ञानिक विषय जैविक रूप से एक युग से अगले युग में उन्नत होते हुए विकसित हुए हैं, तो हम पाते हैं कि वह सब कुछ जिसे परमेश्वर ने आरम्भिक वाचा के युगों में प्रकाशित किया है के पास हमारे युग में उसकी सेवा करने के लिए, यहाँ तक कि मसीह की नई वाचा के युग में भी हमें शिक्षा देने के लिए बहुत कुछ है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम